Vol 5 Issue 10 Nov 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

# Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org**

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

# ''जनतंत्र[1] और उसकी विकास यात्रा''

दिनेश कुमार पाण्डेय
सहा.प्राध्यापक (इतिहास)
शास.श्यामा प्रसाद मुखर्जी महा. सीतापुर जिला –सरगुजा छ.ग.

दिनेश कुमार पाण्डेय

**सारांश :**

''जनतंत्र महज एक शब्द नहीं है, वह सिद्धांत भी है और व्यवहार भी है। इन दोनों के बीच घटित होने वाली अनगिनत अंतःक्रियाओं का वह कभी मूक तो कभी उग्र दर्शक भी रहा है और ऐसे दर्शकों की एक पूरी जमात को नियंत्रित-संचालित करने वाला एक तंत्र भी। उसके कई अर्थ हैं, कई रूप हैं। उनकी अनेकानेक व्याख्या है और उन व्याख्याओं के आधार पर बनी सत्ता की ऐसी अनेक इमारतें हैं, जो हजारों-लाखों के बलिदान की बदौलत खड़ी हुई इनमें से कई ढह गई, कई ढहने के कगार पर हैं और कई ऐसी ऐसी हैं जिन पर खरोचें तो आई लेकिन उनकी बुलंदी बरकरार रही। सिर्फ बीसवीं शताब्दी ही नहीं बल्कि पिछली चार-पांच शताब्दियां इस एक शब्द के इर्दगिर्द घुमती रही। यह शब्द हमेशा अपने नये नायकों की तलाश करता रहा। जो कभी नायक थे उन्हें खलनायक और खलनायकों को नायक बनाने में कभी देरी नहीं की।''

**प्रस्तावना :**

सुकरात से लेकर गांधी तक, अब्राहम लिंकन और निक्सन से लेकर बिल क्लिंटन तक, मार्क्स से लेकर माओ तक, लेनिन से लेकर येल्तसिन तक, नेहरू से लेकर नरसिंह राव तक, जिन्ना से लेकर जिया उल हक तक , थैचर से लेकर श्रीमती गांधी , हिटलर और मुसोलिनी से लेकर खुमैनी तक कई सारे चाउसेस्कू, मार्कोस और सुहार्तो की ढेरों गाथाएं इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। आप चाहें तो उसे पढ़ सकते हैं। विचारधाराओं और इतिहास(२) के अंत की तमाम घोषणाओं के बावजूद भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उत्तर आधुनिकता के इस युग में भी इस शब्द की प्रासंगिकता समाप्त नहीं होने जा रही। बल्कि उम्मीद तो यह है कि २१वीं शताब्दी में यह शब्द एक निर्णायक संघर्ष में शायद साथ-साथ मौजूद रहने के लिए मजबूत कर दिए जाएं। जाहिर है इस बार एक बिल्कुल नया परिवेश होगा और इस नये परिवेश में यह शब्द भी एक नया अर्थ ग्रहण करेगा। इस नये अर्थ को समझने के लिए शुरूआत करें उसके पुराने अर्थ से।

पाश्चात्य इतिहास और दर्शन में पाया गया है कि जनतंत्र के शुरूआती लक्षण यूनान के एथेन्स में पाए जाते हैं। हालांकि कुछ बातें अन्य यूनानी राज्यों में भी देखी जा सकती है। एथेंसवासी पूरी तरह जागृत थे कि वे क्या कर रहें हैं ? और अपने समाज में जनतांत्रिक सिद्धांतों को लागू करने पर बहस मुबाहिसा करते थे। एथेंस का यह प्रयोग बाद के समाजों को प्रेरित करता रहा। डेमोक्रेटिक सिविलाइजेशन के लेखक लिप्सन का मानना है कि ४थी शताब्दी ई. पू. में जनतंत्र के नाम पर विश्व की जो उपलब्धि है उसे किसी न किसी रूप में एथेंस से जोड़ा जा सकता है। प्लेटो और अरस्तु को जनतंत्र के बारे में पहले चिंतक के रूप में चिन्हित किया जाता है। वैसे इस दिशा में महत्वपूर्ण काम हेरोदोतस लिखित ''हिस्टरीज'' है। जिसमें सवाल उठाया गया है कि सर्वोच्च सत्ता कितने हाथों में होती है? हेरोदोतस का जवाब था ''कुछ या बहुत'' । इससे सरकार के तीन रूपों की ओर संकेत मिलता है राजतंत्र, कुलीनतंत्र और जनतंत्र। हेरोदोतस जनतंत्र के तीन सिद्धांत रेखांकित करता है। एक कानून लागू करने में समानता, दूसरा नागरिकों की कानून लागू करने में भागीदारी और तीसरा, बात कहने की समानता (स्वतंत्रता)। पेलोपोनेशियन मुद्दों का महान इतिहासकार थूसिरीदस पांचवी शताब्दी ई.पू. में स्पार्टा से एथेंस की हार के बाद वहां जनतंत्र के पतन का वर्णन करता है।(३)

एथेंस की पराजय के लिए जनतंत्र को जिम्मेदार

ठहराया गया और बाद के दिनों में जनतंत्र के प्रति व्यंग्य और उपेक्षा का भाव बना रहा। जनतंत्र की मुख्य भर्त्सना प्लेटो ने की। उसका मुख्य तर्क था कि वह राज्य की एकता को भंग करता है और बहुतों का शासन कभी भी एकता नहीं स्थापित कर सकता। वह जनतंत्र के मुख्य सिद्धांत स्वतंत्रता के कई अवांछित परिणाम चिन्हित करता है। इस स्वतंत्रता के कारण जनतंत्र में कई व्यक्तित्व विकसित होते हैं जो राज्य की एकता को नुकसान पहुंचाते हैं। प्लेटो की दलील है कि जनतंत्र को समानता का रोग लग जाता है और इससे अराजकता फैल सकती है। वह हेरोदोतस के राजतंत्र,कुलीनतंत्र को सर्वोत्तम तथा जनतंत्र को सबसे निकृष्ट मानता है।

अरस्तू ने अबतक के सभी विचारों का सूत्रीकरण कर राजनीतिक प्रणाली का तर्क संगत वर्गीकरण किया। उसके अनुसार सरकार के कुल छः रूप हो सकते हैं जिनमें तीन सही और तीन भटकावपूर्ण होते हैं। सही रूप वे हैं जहां या तो एक या कुछ लोग या बहुत से लोग सबके हित में राज करते हैं। इन्हें वह राजतंत्र, कुलीनतंत्र और राज्यव्यवस्था (पॉलिटी) कहता है। तीन भटके रूपों को वह नाम देता है तानाशाही, धनिकतंत्र और जनतंत्र। जनतंत्र को वह राज्य व्यवस्था का पतित रूप बताता है जिसमें निम्न वर्ग, निम्न वर्ग के हित में शासन करता है। ऐसे में पूरी संभावना होती है कि सामान्य लोगों की सामान्य बुद्धि द्वारा किए गए शासन में प्रतिभाशाली लोगों का नुकसान होता है और बहुतों द्वारा कुछ लोग शोषित होते हैं। बहरहाल अरस्तू तीन भटके रूपों में जनतंत्र को सर्वोत्तम मानता है। वह इस बहस में पहली बार बेहद महत्वपूर्ण तत्व शामिल करता है और वह है आर्थिक पक्ष। जनतंत्र में न केवल बहुतों का शासन होता है, इन बहुतों में बहुत से गरीब होते हैं। उनके अनुसार जनतंत्र के उजागर लक्षण हैं – जनता की सर्वोच्चता, जनता का मतलब गरीब, और इससे दिशा बनती है समानता, स्वतंत्रता और बहुमत के शासन की ओर।[२]

जिसे हम जनतंत्र कहते हैं उसके बारे में यह माना जाता है कि अंग्रेजी शब्द 'डेमोक्रेसी' का हिन्दी अनुवाद है पश्चिम के राजनीतिक सिद्धांतों की परंपरा में इस शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता रहा है। इस शब्द की उत्पत्ति प्राचीन यूनान में प्रचलित दो शब्दों 'डेमोस' और 'क्रेटोस' से हुई थी। इन्हीं दो शब्दों को मिलाकर 'डेमोक्रेसी' बना। डेमोस का अर्थ है 'जनता' और क्रेटोस का अर्थ है 'शासन या सरकार' यानी शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से देखा जाए तो डेमोक्रेसी का आशय ''जनता का शासन या जनता की सरकार से है''।[६] अब्राहम लिंकन ने जब लोकतंत्र को जनता की एक ऐसी सरकार बताया था जो जनता के द्वारा, जनता के लिए चुनी गई हो तो शायद उनके दिमाग में डेमोक्रेसी का यही शाब्दिक अर्थ रहा होगा। जनतंत्र की यह परिभाषा उसके शाब्दिक अर्थ से काफी मिलती जुलती है।

यूरोप के इतिहास की पृष्ठभूमि में बने राजनीतिक अमल और समाज-विज्ञान के सिद्धांतों में डेमोक्रेसी के साथ कई और अवधारणाएं सामने आती हैं। जिनके इर्द-गिर्द उसका कारोबार खड़ा होता है। या यूं कहें कि जिनके सहारे आधुनिक राजनीति का कारोबार खड़ा होता है। इसमें दो प्रधान धाराएं हैं एक उदारवादी (लिबरल) और दूसरी जनतंत्रात्मक (डेमोक्रेटिक)। ये दोनों अलग-अलग परम्पराएं है। उदारतावादी परम्परा से अगर हमें (लिबर्टी), सम्पत्ति, नागरिकता, हक (राइट्स) , नागर समाज (सिविल सोसायटी) , कानून का शासन (रूल ऑफ लॉ) और नूमाइंदगी (रिप्रेजेंटेशन) जैसे पद मिलते है, तो जनतंत्रात्मक परम्परा से बराबरी (इक्वालिटी), पीपल, पॉपूलर सॉवरेंटी, पीपल्स विल, डायरेक्ट डेमोक्रेसी आदि। इसी दौर में पहली बार हमारा सामना उन पदों से होता है जिन्हें हम हिन्दी में जन, लोक आदि रूपों में पहचानने लगते हैं।[७]

हम देखते हैं कि प्राचीन यूनान के जनतंत्र में नागरिकता का खास महत्व था। मगर वह नागरिकता आधुनिक उदारतावादी नागरिकता से इस मायने में बिल्कुल अलग थी कि उदारतावादी नागरिकता सतत सक्रियता की मांग नहीं करती क्योंकि वह प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को अपना आधार बनाती है। प्रतिनिधित्व अपने उदारतापंथी स्वरूप में श्रम का बंटवारा करके यह सुनिश्चित करता है कि राजनीति हर नागरिक की जिम्मेदारी न बन जाए। नागरिकता का यूनानी दृष्टि एक सतत् सक्रिय नागरिक समूह या सक्रिय नागरिकता के विचार पर टिका है। याद रखना चाहिए कि न तो अरस्तू के लेखन में और न ही आधुनिक युग के शुरूआती दौर में डेमोक्रेसी के अर्थ सकारात्मक थे। आम तौर पर जनतंत्र को भीड़ का राज्य माना जाता था जो अर्जित विशेषाधिकारों को खारिज करना चाहता है। आधुनिक युग में सक्रिय नागरिकता का विचार एक अन्य परम्परा रिपब्लिकनिज्म या गणराज्यवाद में देखने को मिलता है मगर वह भी खुद को जनतंत्र के विचार से अलग रखता है।[८] फिर भी जैसा कि अक्सर होता है, विचार अपना रास्ता खुद बना लेता है, अपने प्रणेताओं के इरादों से आजाद। लिहाजा बकौल क्वेंटिन स्किनर ११वीं से १३वीं सदी के इतालवी शहरी गणराज्य, जो आधुनिक गणराज्यवाद के पूर्वज कहे जा सकते हैं, वैचारिक तौर पर जनतंत्र परम्परा के पोषक भी करार दिए जा सकते हैं। ऐसा इसलिए कि प्राचीन काल के बाद यह पहला मौका था जब खुद – मुख्तारी और पॉपुलर सॉवरेंटी के विचारों के पक्ष में तर्क खड़े किए गए।[९] बाद के वक्त में मैकियावेली (१६वीं सदी) और रूसो (१७वीं सदी) के लेखन और विचारों में यह गणराज्यवादी परम्परा एक पुख्ता आधार पाती है। रूसो के मुताबिक प्राकृतिक दशा से निकलकर इंसान सामाजिक करार के जरिए जिस सार्वजिनक सभा का निर्माण करता है वही रिपब्लिक या गणराज्य है जो यूनानी जमाने में शहर (सिटी या पोलिस) कहलाता था।

जे. सेलविन सैपिरो ने अपनी पुस्तक ' लिबरलिज्म : मीनिंग एंण्ड हिस्ट्री' में लिखा है '' उदारतावादी जनतांत्रिक धारा की उत्पत्ति १५वीं१६वीं शताब्दी में यूरोप में तब हुई जब जीवन के प्रति आधुनिक दृष्टि पुराने सामंती मूल्यों को बेदखल कर रही थी।'' एक सुव्यवस्थित विचारधारा और व्यवहार के रूप में इसका विकास १७वीं १८वीं सदी के दौरान इंग्लैण्ड में हुआ और उसके बाद यूरोप के विभिन्न देशों में एवं ब्रिटिश उपनिवेशों में उसका विस्तार हुआ। इसके पहले इतिहास में हम जिसे 'पुनर्जागरण काल' कहते हैं उसकी नींव पड़ चुकी थी। माना जाता है कि पुनर्जागरण इटली से १५वीं शताब्दी में शुरू हुआ जो आगे विभिन्न रूपों में फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और उत्तरी यूरोप में फैल गया अमेरिका की खोज उसका एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। १६वीं सदी के 'रिफार्मेशन' आंदोलन को भी इसी कड़ी में देखना चाहिए जिसने पहली बार 'चर्च की सत्ता' को चुनौती दी थी। इस आंदोलन का नेतृत्व जर्मनी में लूथर ने किया था जो स्वीटजरलैण्ड और स्कैन्डिनेवियाई देशों में शीघ्र ही फैल गया था। १६वीं १७वीं शताब्दि में ही विज्ञान के क्षेत्र की उपलब्धियों से ऐसे विचारों को एक नया आधार प्राप्त हुआ।[१०]

जनतंत्र और उदारतावादी विचारधारा की दृष्टि से १८वीं शताब्दी 'मील का पत्थर' साबित हुई। इस शताब्दी ने पश्चिम को

ऐसे अनेक विचारक दिए जिन्होंने उस दौर के उलटफेरों को बाकायदा सैद्धांतिक शक्ल प्रदान की। फ्रांस ने जहां वाल्टेयर,रूसो, दिदरो और मांटेस्क्यू पैदा किए वहीं ब्रिटेन की धरती पर लॉक, ह्यूम और एडम स्थिम का उदय हुआ तथा जर्मनी में गेटे, लेसिंग और कांट जैसे चिंतक पैदा हुए। ऐसे ही परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व अमेरिका में उसी समय जेफरसन, फ्रैंकलिन और पेने जैसे विचारकों ने किया था। १८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुई सुप्रसिद्ध 'औद्योगिक क्रांति' इन सारी प्रक्रियाओं की चरम अभिव्यक्ति थी। जनतंत्र के बंद दरवाजे जनता के लिए खुलने लगे और खिड़कियों से उदारतावाद की हवा कमरे के अंदर प्रवेश पाने लगी। जनता की आकांक्षाएं व्यापक रूप ले रही थी और उन्हें बलपूर्वक दबाना किसी राज्य के लिए न सिर्फ मुश्किल बल्कि असंभव था। १९वीं शताब्दी में ढेर सारे परिवर्तन हुए। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर ही नहीं बल्कि आर्थिक धरातल पर भी इन परिवर्तनों की आहट सुनाई पड़ी। एडम स्मिथ ने जहां 'नेचुरल लिबर्टी' की वकालत की[११] वहीं डेविड रिकार्डो और थॉमस राबर्ट माल्थस जैसे अर्थशास्त्रियों ने उदार जनतांत्रिक धारा को एक नई आर्थिक दृष्टि प्रदान की। १९वीं शताब्दी में ही उस मार्क्सवादी धारा का अभ्युदय हुआ जिसने उदारतावादी सोच के समानान्तर सर्वहारा की तानाशाही यानी ' डिक्टेटरशिप ऑफ प्रोलितेरियत' (जिसे वे वास्तविक जनतंत्र मानते थे) की अवधारणा प्रस्तुत कर इतिहास की परम्परागत मान्यताओं को एक झटके में छिन्न भिन्न कर दिया।

१९वीं शताब्दी तक जनतंत्र की उदारतावादी धारा जिस दृष्टि से संचालित होती रही उसे इतिहास में जनतंत्र की शास्त्रीय दृष्टि माना जाता है। मार्क्सवाद ने जो चुनौती पेश की थी उसका मुकाबला करने में शास्त्रीय दृष्टि अक्षम साबित हुई। शायद अपनी अक्षमता के कारणों और सिद्धांत-व्यवहार के फासले से उपजे अंतर विरोधों के तलाश में ही उदारतावादी जनतांत्रिकों की १९वीं शताब्दी गुजर गई। और २०वीं शताब्दी में जनतंत्र की जो नई दृष्टि विकसित हुई उसे इतिहास 'आधुनिक जनतंत्र' के नाम से अभिहित करता है। जनतंत्र के उदारवादी धारा अपने आप को एक नए धरातल पर ले जाने में सफल हुई। जनतंत्र के कायाकल्प के लिए 'लेजे-फेयर' और उसके बाद 'कल्याणकारी राज्य' की अवधारणाएं सामने आयी। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से लेकर २०वीं शताब्दी के मध्यान तक पश्चिम के तकरीबन सभी राष्ट्रों ने इन अवधारणाओं को अंगीकार कर लिया। इक्वैलिटी, फ्रेटर्नटी और लिबर्टी जैसे शब्द आम हो गए थे। ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन एम.कीन्स और विलियम बेवरीज की आर्थिक प्रस्थापनाओं के जलवे थे। हेराल्ड जे. लास्की जैसे राजनीतिक चिंतक उस दौर के लगभग सभी उदारवादी लोकतांत्रिकों के सिपहसालार थे। चर्चिल, निक्सन ही नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र के आधुनिक पुरोधा पं. जवाहरलाल नेहरू तक लास्की से राय मशविरा करना अपना पवित्र कर्तव्य समझते थे।[१२]

जनतंत्र के इस विकास यात्रा में एक ऐसा पड़ाव भी आया जब जनता या लोक को एक अस्पष्ट शब्द माना गया और जनतंत्र की स्थापित अवधारणा को खंडित करते हुए एक नई 'एलिटिस्ट थ्योरी' गढ़ी गई। विल्फ्रेडो पैरेटो और गेटानो मोस्का सरीखे विद्वानों ने कहा '' एक ऐसे समाज के अस्तित्व की परिकल्पना की जा सकती है जिसमें निर्णय कुछ खास लोग करें और उनके निर्णयों को पूरा समाज स्वीकार करे। यह काम राजनीति को अपने नियंत्रण में रखते हुए भी किया जा सकता और उसके बिना भी। अल्पमत का प्रतिनिधित्व करने वाले इन विशिष्ट एवं प्रभावशाली लोगों को 'एलिट' कहा जा सकता है।[१३] २०वीं शताब्दी के चौथे पांचवे दशक में इस सिद्धांत का विकास हुआ और पश्चिम के कई विद्वानों ने इस सिद्धांत के आलोक में जनतंत्र के वास्तविक अर्थ को समझने का प्रयास किया। शुंपीटर, एरॉन,सारतोरी, मैन्हेम, और राबर्ट डॉल सरीखे राजनीतिक चिंतकों की अवधारणाएं इसी श्रृंखला की एक कड़ी है।[१४]

समाजवादी परम्परा और मार्क्सवाद के आविर्भाव के साथ ही जन समूहों के बारे में नकारात्मक रूप काफी हद तक बदला और माना जाने लगा कि आमलोग ही इतिहास के निर्माता होते हैं।[१५] जनतंत्र के विकास यात्रा में अगर हम यूरोप और समाज-विज्ञान के इस छोटे से वाकये को छोड़ दें तो कुल मिलाकर जन समूह के प्रति हिकारत का भाव ही देखने को मिलता है। साथ ही जनतंत्र से जुड़े जितने भी पड़ोसी पद हम देखते हैं, सब में ऐसा ही भाव दिखता है। अंग्रेजी में और आमतौर पर समाज-विज्ञान में मास, मासेज, मॉब, क्राउड सभी में एक नकारात्मकता मौजूद है। इसी से जुड़ा एक और शब्द है पॉपुलर - जिसका अर्थ आहिस्ता आहिस्ता बदलता गया और कुछ हद तक सकारात्मक अर्थ ग्रहण करता गया, खासकर मार्क्सवादी इतिहासकारों के हस्तक्षेप के चलते। ग्योर्ग रूडे, ई.पी. थॉमसन, ऐरिक हॉब्सबाम आदि इतिहासकारों ने न सिर्फ पॉपुलर शब्द को बल्कि क्राउड को भी सकारात्मक अर्थ में इस्तेमाल किया। इसके बावजूद सैद्धांतिक स्तर पर जो अर्थ रूढ़ हुए वे वही थे जिनमें जनसमूहों का खौफ (फियर ऑफ द मासेज) मुखर होकर बोलता था।[१६] इसी इतिहास से गहरे ढंग से जुड़ा है पॉपुलिज्म जिसके लिए हमारे पास ज्यादातर भारतीय भाषा में कोई शब्द नहीं है आधुनिक राजनीति में जनतंत्र के साथ ओतप्रोत ढंग से जुड़ी इस परिघटना के लिए शब्द न होना अपने आप में एक दिलचस्प सवाल है। अमेरिका में पॉपुलिज्म की नींव पड़ी थी, १९वीं सदी के उत्तरार्द्ध में वजूद में आए किसान मोर्चा के जरिए। इसका पूरा नाम था ' नेशनल फार्मर्स अलायन्स एण्ड इण्डस्ट्रियल यूनियन' और जिनकी गतिविधियों में सहकारी समितियां बनाना, बिचौलियों को खत्म करना और सीधे बड़े शहरों की मण्डियों में किसानों के उत्पाद बेचना शामिल थे। इसी किसान मोर्चे के कंधे पर सवार होकर सदी के आखिरी दशक में पीपल्स पार्टी नामक एक राजनीतिक दल भी १८९१ में अस्तित्व में आया। इसी पार्टी का दूसरा नाम पॉपुलिस्ट पार्टी पड़ा। इसी तरह रूस में जिस संगठन और प्रवृत्ति को पॉपुलिस्ट कहा गया , उसका नाम था 'नारोदनाय वोल्या' अर्थात जनता का इरादा।[१७]

२०वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जनवाद (पापुलिज्म) पर जो शोध हुआ है उनमें भी स्थिति बहुत साफ नहीं होती इसके बावजूद इन जनवादी आंदोलनों के कई पहलुओं पर ये रोशनी डालने में कामयाब हुए। कुछ हद तक रेखांकित कर पाए कि ये मूलतः यथास्थिति विरोधी होते हैं , पारम्परिक राजनीतिज्ञों के प्रति अविश्वास और संस्थानिक प्रक्रियाओं का विरोध इनकी खास पहचान होती है। उनका यह रवैया जनता की सीधे लामबंदी की कोशिशों में नजर आती है।[१८]

इसी तरह बीसवीं सदी में लातीनी अमेरिका के कई देशों में इस तरह के कई आंदोलन देखने को मिलते हैं। लातीनी अमेरिका के संदर्भ में जो अध्ययन हुए हैं और जिनकी चर्चा लाक्लाऊ तफसील से करते हैं, उन सभी में इन्हें पिछड़ेपन की निशानी के तौर पर समझने की प्रवृत्ति हावी जान पड़ती है।[१९] यह दृष्टिकोण अपने आप में भ्रामक है क्योंकि वह इस बात को नजरअंदाज कर देता है कि खुद यूरोप में फासिस्ट आंदोलनों में भी जनवाद के भरपूर तत्व मिलते हैं। उनका यही तर्क एक मायने में इस परिघटना के गंभीर

अध्ययन के रास्ते खोलता है। ऐसा इसलिए कि इसके जरिए वे ये स्थापित करते हैं कि जनवाद न तो एक खास किस्म का आंदोलन है और न ही एक खास तरह का विकास तंत्र। इसी आधार पर लाक्लाऊ का मानना है कि जनवाद एक जनोन्मुखी आह्वान (पॉपुलर इंटरपैलेशन) है जो किसी भी विचार तंत्र और आंदोलन में मौजूद हो सकता है। लाक्लाऊ कहते हैं कि ''इसी वजह से हम एक साथ हिटलर, माओ और पेरों (अर्जेंटीना के राजनेता) को जनवादी कह सकते हैं। इसलिए नहीं कि उनके विचारतंत्र एक ही वर्ग हित को मुखरीत करते थे बल्कि इसलिए कि इन सभी के विचारतंत्रीय विमर्श में जनोन्मुखी आह्वान दिखाई देता है।''[२०] सीधे साफ शब्दों में कहे तो जनवाद सियासत गढ़ने का तरीका भर है।[२१]

बात समेटते हुए यह कहा जा सकता है कि जनतंत्र कोई पकी-पकाई, बनी-बनायी चीज नहीं है। यह दुनियाभर में बनने -बिगड़ने की प्रक्रिया में है और हमेशा रहती है।उदारतावाद और प्रतिनिधिक व्यवस्था से भी उनका टकराव लगातार चलता रहता है। ये संघर्ष धीमें -धीमें सुलगता है, मगर कभी-कभी ज्वालामुखी के लावे की तरह बाहर आ जाता है इस नजरिये से देखें तो हालिया जनआंदोलनों को अपवाद समझना एक बहुत बड़ी भूल होगी। हमें यह समझना होगा है कि स्वाभाविक समय में उपर से शांत लगने वाले जनतंत्रों में भी एक जद्दोजहद चलती रहती है। छोटे-छोटे विद्रोहों और नाफरमानियों के असर आहिस्ता आहिस्ता जमा होते रहते हैं और लम्बे समय तक उनकी अवहेलना बड़ी बगावत का रास्ता खोल सकती है।

## *संदर्भ एवं टिप्पणियां*

१.इस लेख में डेमोक्रेसी के लिए जनतंत्र शब्द को चुनने की एक वजह यह है कि इसका ताल्लुक जन से है, जो हाल का गढ़ा गया शब्द है। वैसे तो हिन्दी में लोक शब्द का पारम्परिक चलन है, जिससे लोकतंत्र और लोकशाही जैसे शब्द बनते हैं। जनतंत्र की जगह इन शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता था, परन्तु उन्हें न चुनने के पीछे भी एक वजह है, लोक का पारम्परिक चलन होने के कारण वह अंग्रेजी के फोक के ज्यादा नजदीक बैठता है और हमारे पारम्परिक इस्तेमाल में लोक संस्कृति, लोक भाषा आदि का एक खास अर्थ शास्त्रीय फर्क करने के लिए किया जाता है। उस अर्थ में भी उसका अर्थ फोक के बहुत नजदीक है। मगर इसके अलावा भी एक वजह है जो समाज-विज्ञानी नजरिए से अहम है जन और जनता का मौजूदा अर्थ पीपल के लिए रूढ़ हो चुका है। और वह हमें बार-बार याद दिलाता है कि इसकी जड़ें हमारी आधुनिक राजनीति में कितनी नई है। जन और जनता का ताल्लुक उस नए किरदार से है जिसे आधुनिक राजनीति में विल (संकल्प/इरादा) सॉवरेंटी (सम्प्रभुता) प्रतिनिधित्व का आधार माना जाता है। हर संविधान और हर दस्तावेज इसी की दुहाई देकर वि द पीपल के नाम पर अपने वजूद को जायज ठहराता है।

२.ये घोषणाएं एल्विन टॉफलर और फ्रांसिस फुकुयामा सरीखे उदारवादी चिंतकों ने की थी। फुकुयामा ने तो ''द इंड ऑफ हिस्ट्री एंड द लास्ट मैन'' नामक एक पुस्तक भी लिख डाली थी जो १९९२ में सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में से एक थी ।

३.एस.पी.बनर्जी - '' जनतंत्र कुछ विचार'' इतिहास बोध पत्रिका RNI ४६८२५.८९ पृष्ठ २६-२७ द्वारा (प्रस्तुत अंश लेख डी.पी. चट्टोपाध्याय द्वारा संपादित ''एसेज इन सोशल एण्ड पोलिटिकल फिलॉसफी से लिया गया है।)

४.वही

५.वही

६.द न्यू इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, पंद्रहवां संस्करण वाल्यूम ४ पृष्ठ ५

७.आदित्य निगम- ''जनतंत्र और जनवाद के बीच कुछ सैद्धांतिक सवाल'' प्रतिमान (समय समाज और संस्कृति) जन.-जून. २०१४ ISSN २३२०.८२०१ पृष्ठ ८

८.डेविड हेल्ड (१९९६) दृ माडल्स ऑफ डेमोक्रेसी पॉलिटी प्रेस कैम्ब्रिज पृ. ४०-४३

९.वही पृ. ४२

१०.अरूण पाण्डेय - हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार ISBN ८१. ७०५५. ८०१.८ पृ.३-४

११.एडिम स्मिथ - द वेल्थ ऑफ नेशन १९७६

१२.अरूण पाण्डेय - हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार ISBN ८१. ७०५५. ८०१.८ पृ.४-५

१३.विल्फ्रेडो पेरेटो - ' द माइंड एण्ड सोसायटी (१९१५-१९१९) और गेटानो मोस्का - द रूलिंग क्लास (१९३९), राबर्ट माइकल और सी.ड्ब्ल्यू मिल्स जैसे विचारकों ने भी एलिटिस्ट थ्योरी में अपनी आस्था व्यक्त की थी।

१४.अरूण पाण्डेय - हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार ISBN ८१. ७०५५. ८०१.८ पृ.४-५

१५.आदित्य निगम- ''जनतंत्र और जनवाद के बीच कुछ सैद्धांतिक सवाल'' प्रतिमान (समय समाज और संस्कृति) जन.-जून. २०१४ ISSN २३२०.८२०१ पृष्ठ १०

१६.वहीं पृ. १०

१७.वहीं पृ. १०-११

१८.एर्नेस्तो लक्लाऊ (१९७९)-पॉलिटिक्स एण्ड आइडियालॉजी इन मार्क्सिस्ट थियरी वरसो, लंदन एवं एर्नेस्ट लक्लाऊ (२००५), ऑन पापुलिस्ट रीजन वरसो लंदन व न्यूयार्क पृ. १४७-१५०

१९.लक्लाऊ खासतौर पर जर्मेनि और तोर्कुआतो द तेल्ला के महत्वपूर्ण शोध पर तवज्जो देते हैं क्योंकि इन्हें इस विषय का सबसे उम्दा शोध कहा जा सकता है।

२०.वहीं प. १७४

२१.एर्नेस्तो लक्लाऊ(२००५), ऑन पापुलिस्ट रीजन वरसो लंदन व न्यूयार्क पृ.१०

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org